मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 10

MTT–045

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2023

एम.टी.टी.-045 : शीर्षक : हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

(क) वाणिज्यिक साहित्य के अनुवाद की आवश्यकता तथा महत्व बताइए। वाणिज्यिक साहित्य के अनुवाद की चुनौतियों की सोदाहरण चर्चा कीजिए।

अथवा

(ख) कथा साहित्य के अनुवाद के महत्व का उल्लेख करते हुए विस्तार से समझाइए कि कथा साहित्य के अनुवाद में कौन-सी सावधानियाँ बरतना आवश्यक है।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

   (i) संवैधानिक

   (ii) स्मारक

   (iii) संख्या

   (iv) अनुपस्थित

   (v) चक्रवात

   (vi) मूल्यांकन

   (vii) अभियान

   (viii) नियंत्रण

   (ix) लोकतंत्र

   (x) जनगणना

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

   (i) सालियानो

   (ii) पधरनामो

(iii) भुलनामो

(iv) शख्सी

(v) शुक्रगुजारी

(vi) सियासी

(vii) पेचिरो

(viii) निमाउ

(ix) तकरीर

(x) आगाटो

4. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 15

हिंदी शब्द :

(i) सीमांकन

(ii) पत्राचार

(iii) सम्मेलन

(iv) सामर्थ्य

(v) प्रतिबंध

सिंधी शब्द :

(i) अग॒कथी

(ii) वाजिबु

(iii) कसमनामो

(iv) छंडछाण

(v) रवाजी

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 15×2=30

(क) ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने यहाँ प्रतिष्ठित डायमंड लीग फाइनल्स का खिताब जीतकर एक और ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। चोपड़ा यह खिताब जीतने वाले पहले भारतीय एथलीट हैं। चोपड़ा ने फाउल से शुरुआत की लेकिन अपने दूसरे प्रयास में 88.44 मीटर भाला फेंककर वह शीर्ष पर पहुँच गए। यह उनके करियर का चौथा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है जो आखिर में उन्हें स्वर्ण पदक दिला गया। पदक जीतने के बाद नीरज ने कहा, "आज वाडलेज के साथ प्रतिस्पर्धा बहुत अच्छी रही। उसने भी अच्छे थ्रो किए। मुझे आज 90 मीटर तक

भाला फेंकने की उम्मीद थी लेकिन मैं खुश हूँ कि मेरे पास अब डायमंड ट्रॉफी है और यह सबसे महत्वपूर्ण है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ से मेरे साथ मेरा परिवार भी है। यह पहला अवसर है जबकि वे किसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में आए हैं।" नीरज ने यह भी कहा, "इयुगेन में मैं चोटिल हो गया था और मुझे दो-तीन सप्ताह आराम की जरूरत है। इसके बाद मैं रिहैब करूँगा और अगले साल की तैयारियों में जुट जाऊँगा।"

(ख) वर्तमान काल में वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने एवं उनके उपभोग पर भरपूर जोर दिया जा रहा है। उत्पादक अपनी वस्तुओं की बिक्री द्वारा अधिकाधिक लाभ कमाना चाहते हैं तो उपभोक्ता उनका प्रयोग कर सुख एवं संतुष्टि पाना चाहता है। उपभोक्ताओं को इसी प्रवृत्ति का फायदा उठाने के लिए उत्पादक तरह-तरह के साधनों का सहारा लेते हैं। आज वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने का प्रमुख हथियार विज्ञापन है। विज्ञापन शब्द 'ज्ञापन' से 'वि' उपसर्ग लगाने से बना है, जिसका अर्थ है—विशेष जानकारी देना। यह जानकारी उत्पादित वस्तुओं-सेवाओं आदि से जुड़ी होती है। विज्ञापन में वस्तु के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता

है, जिससे उपभोक्ता लालायित हों और इन्हें खरीदने के लिए विवश हो जाएँ। विज्ञापन के कारण उत्पादकों को अपनी वस्तुओं के अच्छे दाम मिल जाते हैं तो उपभोक्ता को वस्तुओं की जानकारी, तुलनात्मक दाम एवं चयन का विकल्प मिल जाता है।

विज्ञापन लेखन करते समय –

- मध्य में विज्ञापित वस्तु का नाम मोटे अक्षरों में लिखना चाहिए।
- 'सेल धमाका', 'खुशखबरी', 'खुल गया' जैसे लुभावने शब्दों को लिखना चाहिए।
- विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करना चाहिए।
- विज्ञापित वस्तु का बड़ा-सा चित्र देना चाहिए।
- 'स्टॉक सीमित' या 'जल्दी करें' जैसे प्रेरक शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।
- कोई छोटी-सी तुकबंदी हो, जिससे पढ़ने वाला आकर्षित हो जाए।
- संपर्क का भी उल्लेख करें।

(ग) लगभग 35 साल का एक खान आँगन में आकर रुक गया। हमेशा की तरह उसकी आवाज सुनाई दी- "अम्मा... हींग लोगी ?"

पीठ पर बँधे हुए पीपे को खोलकर उसने नीचे रख दिया और मौलसिरी के नीचे बने हुए चबूतरे पर बैठ गया। भीतर बरामदे से नौ-दस वर्ष के एक बालक ने बाहर निकलकर उत्तर दिया- "अभी कुछ नहीं लना है, जाओ !"

पर खान भला क्यों जाने लगा ? जरा आराम से बैठ गया और अपने साफे से छोर से हवा करता हुआ बोला-"अम्मा, हींग ले लो, अम्मा! हम अपने देश जाता हैं, बहुत दिनों में लौटेगा।" सावित्री रसोईघर से हाथ धोकर बाहर आई और बोली-"हींग तो बहुत-सी ले रखी है खान! अभी पन्द्रह दिन हुए नहीं, तुमसे ही तो ली थी।"

वह उसी स्वर में फिर बोला—"हेरा हींग है माँ, हमको तुम्हारे हाथ की बोहनी लगती है। एक ही तोला ले लो, पर लो जरूर।" इतना कहकर फौरन एक डिब्बा सावित्री के सामने सरकाते हुए कहा- "तुम और कुछ मत देखो माँ, यह हींग एक नंबर है, हम तुम्हें धोखा नहीं देगा।"

सावित्री बोली–"पर हींग लेकर करूँगी क्या ? ढेर–सी तो रखी है।" खान ने कहा–"कुछ भी ले लो अम्मा! हम देने के लिए आया है, घर में पड़ी रहेगी। हम अपने देश कूँ जाता है। खुदा जाने, कब लौटेगा ?" और खान बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए हींग तौलने लगा। इस पर सावित्री के बच्चे नाराज हुए। सभी बोल उठे–"मत लेना माँ, तुम कभी न लेना। जबरदस्ती तौले जा रहा है।" सावित्री ने किसी की बात को उत्तर न देकर, हींग की पुड़िया ले ली। पूछा–"कितने पैसे हुए खान ?"

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) मुखड़ियुनि जे मुंहं ते ताला ऐं कैदु गुलनि जो वासु,
अला ड़े, हीउ बि जमानो आयो!

(i) भुलिजी विया गजगोड़ शींहं ऐं गिदड़नि खे पिया क्रियासु,
अला ड़े, हीउ बि ज़मानो आयो!

(ii) कोइल जे गीतनि खां वणंदड़ कांअ जी थी बकवास,
अला ड़े, हीउ बि ज़मानो आयो!

(iii) 'गांधीजीअ' जे रत में ड̱िसु, बुड̱ी वियो
इतिहास,
अला ड़े, हीउ बि ज़मानो आयो!

(iv) लुटीनि था बम, भूंइ जी अस्मत, त बि आ
चुप आकासु,
अला ड़े, हीउ बि ज़मानो आयो!

(v) दीन धर्म जी ओट में वहसे, वहिशानी राकासु,
अला ड़े, हीउ बि ज़मानो आयो!

(vi) छिने पटे पियो कींअं हिकु माण्हू, बि̱ए
माण्हूंअ जो मासु,
अला ड़े, हीउ बि ज़मानो आयो!

(ख) चंचल : छा गा̱ल्हि आहे राकी, छा थियो आहे जो अज̱
तूं थियेटर छड̱ण जी गा̱ल्हि करे रहियो आहीं।

राकी : बु̱धाइणु जरूरी नथो सम्झां।

चंचल : इहो न विसार तूं अज̱ु जंहिं मुकाम ते आहीं उहो

थियेटर जे बदोलत ई आहीं। तो जहिड़ो सुठो कलाकार... आख़िरि...।

राकी : हाणे रहणु डे यार, वधीक साराह न करि मुंहिंजी।

मां फ़ैसिलो करे छडियो आहे-न करणो आहे मूंखे थियेटर... कोई फ़ाइदो नाहे।

चंचल : तूं कडहिं खां फ़ाइदो नुक्सान सोचण लगें।

राकी : अजु खां ... इएं सम्झु हींअर खां।

मुकेश : (राकीअ जो हथु पकड़े) तुंहिंजो इहो फ़ैसिलो ठीक नाहे... थियेटर तुंहिंजी जानि आहे ऐं तूं ... तूं थियेटर छडे नथो सघीं।

राकी : छो नथो छडे सघां ? तव्हांखे थियेटर करणो आहे कयो पर महिरबानी करे मूंखे हिन झंझट खां मुक्त कयो।

मुकेश : ठीक आहे तूं नथे करणु चाहीं त न करि। पर बुधाई त सहीं अचानक थियेटर तरफ तुंहिंजी बेरुखी ... को त कारणु हूंदो।